बायोकैमिस्ट्री को बॉटनी और जूलॉजी के संबद्ध विषयों में शामिल करने की आवश्यकता

बायोकैमिस्ट्री जीवन विज्ञान (Life Sciences) का एक अभिन्न और मुख्य आधार है। यह विज्ञान जीवों के जैविक और रासायनिक प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है। पौधों और जानवरों की शारीरिक क्रियाओं को समझने के लिए बायोकैमिस्ट्री का अध्ययन अनिवार्य है। फिर भी, मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC) द्वारा सहायक प्राध्यापक (बॉटनी और जूलॉजी) की 2024 और 2022 की अधिसूचनाओं में बायोकैमिस्ट्री को संबद्ध विषयों की सूची से बाहर कर दिया गया है। यह न केवल अनुचित है, बल्कि हजारों बायोकैमिस्ट्री के छात्रों के करियर को खतरे में डालने वाला निर्णय है।

बायोकैमिस्ट्री का महत्व;

1. जीवन विज्ञान का केंद्र बिंदु;

बायोकैमिस्ट्री पौधों और जानवरों दोनों की जैविक प्रक्रियाओं को समझने के लिए मुख्य है। यह ऊर्जा उत्पादन, चयापचय (metabolism), आनुवंशिकी, और सेलुलर सिग्नलिंग जैसी प्रक्रियाओं को परिभाषित करती है।

2. बॉटनी और जूलॉजी में बायोकैमिस्ट्री का योगदान;

- पौधों में प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis), श्वसन, और पोषक तत्वों का परिवहन, जो बॉटनी के मुख्य विषय हैं, बायोकैमिस्ट्री पर आधारित हैं।

- जंतुओं में हार्मोनल रेगुलेशन, एंजाइमेटिक गतिविधि, और ऊर्जा उत्पादन, जो जूलॉजी का केंद्र है, बायोकैमिस्ट्री के बिना अधूरा है।

3. अंतर-सम्बंधित विषय;

बायोकैमिस्ट्री का अध्ययन अन्य संबद्ध विषयों जैसे माइक्रोबायोलॉजी, जैव प्रौद्योगिकी (Biotechnolog4), आनुवंशिकी (Genetics), और जीवन विज्ञान (Life Sciences) से गहराई से जुड़ा है।

MPPSC और मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा का परिप्रेक्ष्य;

1. 2017 में बायोकैमिस्ट्री का मान्यता प्राप्त होना;

MPPSC की 2017 की अधिसूचना में बायोकैमिस्ट्री को बॉटनी और जूलॉजी के संबद्ध विषयों में शामिल किया गया था। इस आधार पर, बायोकैमिस्ट्री के कई विद्यार्थी सहायक प्राध्यापक के रूप में चयनित हुए और वर्तमान में कार्यरत हैं।

2. 2022 और 2024 में असमान्य परिवर्तन;

- 23 दिसंबर 2022 को, मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग ने बिना किसी स्पष्ट आधार या समिति की सिफारिश के, बायोकैमिस्ट्री को संबद्ध विषयों की सूची से बाहर कर दिया।

- 2024 की अधिसूचना में भी यही निर्णय दोहराया गया।

3. अन्य राज्यों का दृष्टिकोण;

राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में बायोकैमिस्ट्री को बॉटनी और जूलॉजी के मुख्य संबद्ध विषयों में माना गया है।

GC के नए नियमों का उल्लंघन;

UGC के 2024 के नए विनियमों के अनुसार;

- यदि किसी अभ्यर्थी के पास किसी विशेष विषय में NET/SET/PhD है, तो वह उस विषय में सहायक प्राध्यापक पद के लिए पात्र होगा, भले ही उसकी UG/PG किसी अन्य विषय से हो।

- बायोकैमिस्ट्री विद्यार्थी CSIR-UGC NET (Life Sciences) में उत्तीर्ण होते हैं और बॉटनी तथा जूलॉजी जैसे विषयों में आवेदन करने के लिए पात्र होते हैं।

बायोकैमिस्ट्री को संबद्ध विषयों से बाहर करने के परिणाम;

1. विद्यार्थियों का भविष्य खतरे में;

बायोकैमिस्ट्री के विद्यार्थियों के लिए MPPSC के माध्यम से सहायक प्राध्यापक पद का कोई अवसर नहीं रह गया है।

2. विज्ञान के क्षेत्र में असंतुलन;

बायोकैमिस्ट्री को संबद्ध विषयों से बाहर करना शिक्षा और शोध के क्षेत्र में एक बड़ा अंतर पैदा करेगा।

3. अन्यायपूर्ण निर्णय;

जब अन्य संबद्ध विषय जैसे माइक्रोबायोलॉजी, जैव प्रौद्योगिकी, आनुवंशिकी आदि को मान्यता दी गई है, तो बायोकैमिस्ट्री को बाहर करना अनुचित है।

हमारी माँगें और सुझाव;

1. पुनः समावेशन;

बायोकैमिस्ट्री को बॉटनी और जूलॉजी के संबद्ध विषयों में पुनः शामिल किया जाए।

2. नीतिगत स्पष्टता;

उच्च शिक्षा विभाग और MPPSC को इस निर्णय के आधार और तर्क को सार्वजनिक करना चाहिए।

3. विद्यार्थियों के भविष्य की सुरक्षा;

बायोकैमिस्ट्री विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों से वंचित न किया जाए।

निष्कर्ष;

बायोकैमिस्ट्री को संबद्ध विषयों में पुनः शामिल करना न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही है, बल्कि यह हजारों विद्यार्थियों के भविष्य को बचाने का एकमात्र तरीका है। यह निर्णय जीवन विज्ञान के अध्ययन को समृद्ध करेगा और शिक्षण तथा शोध क्षेत्र में नए अवसर प्रदान करेगा।

बापचा बड़ौद के शिक्षक कर रहे गृह संपर्क

शासकीय नवीन हाई स्कूल बापचा बड़ोद के शिक्षकों द्वारा कैचमेंट की शालाओं के ग्रामों में 1 अप्रैल 2025 से प्रारंभ होने वाले नवीन शिक्षा सत्र में प्रवेश हेतु संपर्क अभियान चलाया जा रहा है । इसके अंतर्गत आज ग्राम जमुनिया के कक्षा 8 से 9 में तथा कक्षा 9 से 10 में प्रवेश लेने वाले बच्चों तथा उनके अभिभावकों से संपर्क कर प्रवेश संबंधी जानकारियां और सूचनाएं दी गई। आज के संपर्क में विद्यालय के शिक्षकों कैलाश भावसार और तृप्ति श्रृंगी ने घर घर जाकर संपर्क किया जिसमें शाला के पूर्व छात्रों सोमेश व्यास , राहुल व्यास, भविष्य गोस्वामी, अर्जुन गिर ने भी सहयोग किया । उल्लेखनीय है कि कैचमेंट और आसपास की 8 माध्यमिक शालाओं तथा राजस्थान से लगे 13 गांवों से छात्र छात्राएं प्रतिवर्ष विद्यालय में श्रेष्ठ परिणाम हेतु प्रवेश लेते हैं । विद्यालय में कक्षा कक्ष के अलावा प्रोजेक्ट कार्य, खेल गतिविधियों,प्रायोगिक क्रियाकलापों के साथ विभिन्न शैक्षणिक तथा सहशैक्षणिक गतिविधियां रोचक तरीके से संचालित होती है जिनमें छात्र छात्राएं आनंदमय वातावरण में सीखने की प्रक्रिया में लगे रहते हैं । इस वर्ष से इंटरएक्टिव पैनल के द्वारा स्मार्ट कक्षाएं भी प्रारंभ की जा रही हैं । प्राचार्य डॉ दशरथ मसानिया ने बताया कि ग्राम सरपंच तथा पालकों का भी अच्छा सहयोग मिलता है। शिक्षक भी अपने अपने विषय को कुशलतापूर्वक नवाचारो का उपयोग कर शिक्षण देते हैं।

इक्कीसवीं सदी के द्वार पर लडखडाता बचपन

बचपन जीवन का सबसे सुहाना समय होता है।मीठी मीठी शरारतें,भोली भोलीमुस्कुराहटें ,मासूमियत से खिले चेहरे और उनके निश्छल हंसी में जीवन कापरम सुख मिल जाता है।इनके साथ इंसान अपना हर गम भूल जाता है।इसीलिएइन्हें नन्हे फ़रिश्ते या एंजिल कहा जाता है।यह एक बहुत विचित्र विडम्बना है कि समय के साथ - साथ हमारी भावनाएं औरमानसिकताएं भी बदलती जा रही है।समय के अभाव के कारण ,व्यस्ततम जीवन शैली,और ओढ़ी हुई मजबूरियों के कारण अभिभावक वर्ग और अध्यापक वर्ग इननौनिहालों की खुशगवार जिन्दगी से खिलवाड़ कर रहे है।बच्चों पर भारी बोझिलबस्ते, नीरस पढाई और बिगड़ते अनुशासन के कारण शिक्षा अपना गौरव पूर्णस्वरुप खोते जा रही है ।आज का पांच छः साल का बच्चा अपने कंधे पर 20-25 किताबो का बोझ लेकर घरसे स्कूल जाता है ,तब उसके चेहरे पर बोझ का दर्द स्वतः उभर के आ जाताहै.यही बोझ बच्चो द्वारा पढाई के प्रति अरुचि का महत्वपूर्ण कारण बनजाता है।थके शरीर और मन में होमवर्क का तनाव उसके स्वस्थ पर सीधा असरडालता है।जिसके कारण बच्चो में चिडचिडापन ,झूठ बोलना,भाई बहनों सेझगड़े,आदि बुराइयाँ घर कर जाती है।भविष्य में यही भारी बस्ते स्पोंड़ोलाईटिस,सर्वाइकल,साइटिका, जैसे गंभीरबीमारियों के कारण बन जाते है।तब क्या स्कूल के पढ़े लिखे अध्यापक गण या अकादमिक शासन उनकीपीठ पर क्षतिपूर्ति का मलहम लगायेंगे या इस अदूरदर्शीता को दूर करने काप्रयास करेंगे ।यह एक ऐसा सच है जिसकी कड़वाहट हर बच्चा हर दिन चखता है।और मज़बूरी के घूंटपीता है।और मजबूर अभिभावक सिर्फ वक़्त का तमाशा देखते रह जाते है।बच्चों पर आवश्यकता से अधिक विषयों एवं किताबों के लिए,एडमिनिस्ट्रेशन, अध्यापक वर्ग केसिवाय पुस्तक विक्रेता ,दलाल और कमिशन एजेंट सभी जिम्मेवार है.इसीलिए हरसाल सिलेबस और यूनिफार्म बदल दिए जाते है.ताकि उनकी चाँदी होती रहे ।इनबातो को अगर गंभीरता से नही लिया गया तो इसके परिणाम बुरे होंगे।किताबो की संख्या और बदलते पाठ्यक्रम के लिए शिक्षा मंडल ,मानव संसाधनमंत्रालय ,राजनैतिज्ञ ,लेखक ,पुस्तक विक्रेता सभी थोड़े बहुत उत्तरदायीहै।मगर शासन का मौन व्रत कब भंग होगा पता नही।शोध, मनोवैज्ञानिक और बुधिजिवियो का कथन है की बच्चो को शिक्षा खेलकूद केमाध्यम से दी जाना चाहिए .जिसे व्यावहारिक ज्ञान,चित्रों, गायन ,अभिनयआदि से बच्चो की प्रतिभा का चहुमुखी विकास किया जाना चाहिए।आज विदेशोमें भी ऐसी ही शिक्षा दी जा रही है जो प्रयोगात्मक होने के साथ साथव्यावहारिक भी है।बच्चो के सम्पूर्ण विकास के लिए अनुशासन का बहुत महत्व होता है .मगर आजभी कई कानून बनने के बाद भी स्कूलों में सख्ती और सजा का प्रावधानहै।अनुशासन के आड़ में निरंकुशता बढ़ती जा रही है। कभी बच्चो से जूते साफकरवाए जा रहे है कही जूतों की माला पहनाई जा रही है,कही कान में चोटलगाई जा रही है।सजा के नाम पर बच्चो को अपमानित करना उनके आत्मसम्मान कोठेस पहुचता है जिससे बड़े होकर वे उद्दंड और बदतमीज़ बन जाते है।बच्चो के साथ ऐसी घटनाएँ अनुशासन नही अत्याचार कहलाती है।भविष्य में यहीअपमानित बच्चा ऐसी सख्तियों को तोड़ने का प्रयास अवश्य करेगा और ऐसी हीघटनाये चरित्र निर्माण से जुड़ जाती है ।और वह बच्चा बड़ा होकरउद्दंड नागरिक की श्रेणी में खड़ा होकर समाज के लिए अपराधी बन जायेगा ।इनबातो पर आज विचार करना जरुरी है।वरना स्कूलो में इस प्रकार की वारदातोंकी सीमाये पार होती रहेंगी ।जो घर ,परिवार ,समाज और देश के लिए घातकसिद्ध होगा ।आज की शिक्षा में पैसों की अहमियत को नकारा नही जा सकता ।शिक्षा यानि आजका कम लागत का फलता फूलता बिजनेस बन गया है।डोनेशन में फीस,एडमिशन मेंफीस,स्पोर्ट्स के लिए फीस,और तो और टी सी के लिए भी फीस देना पड़ता है।आजपैसे वालो का अयोग्य बच्चा भी डोनेशन से एडमिशन पा लेता है,और गरीब कायोग्य बच्चा भी दान न देने पाने के कारण एडमिशन नही पा पाता।आगे चलकरवही डोनेशन वाला बच्चा और दान देकर मेडिकल और इंजीनियर ,सी ऐ .बन जाताहै।शिक्षा के नाम पर फलफूल रहे ऐसे व्यवसाय को भगवान् हमेशा बुरी नजर लगाये।.स्कूल के संचालको और मालिको से एक निवेदन किया जा सकता है की स्कूल मेंडोनेशन नाम बहुत बदनाम हो चला है इसे कोई और सूटेबल नाम दे सकते है।आजकल स्कूलो का स्टैंडड का आंकलन उसकी बढ़ती फीस से किया जा रहा है।जबकिपढाई का स्तर का ग्राफ नीचे की ओर गिरता जा रहा है।आये दिन इन निजीस्कूलो की इमारते और भव्यता बढ़ती ही जा रही है ।शायद हर साल बढ़ती फीस इसकामुख्य कारण होंगे ।साल में एक या दो दिन बच्चो के नाखून ड्रेस चेक होते होंगे।पर मेडिकलफीस हर महीने दिया जाना चाहिए ।आखिर मेडिकल फीस लेना स्कूल को रेपुरेशनका प्रश्न है।भले ही इन सब फीस को भरते भाते माँ बाप खुद मडिकल ऐड केमोह्ताज हो जाये ।खेलकूद के नाम पर भी लिए जाने वाले फंड का हसिलाई जीरोहो रहता है।क्योकि कई स्कूल में खेल के मैदान भी नही ओते जहा मैदान हैवहा भाई भतीजे वाद का साम्राज्य है।कई बार ऐसा भी देखने आया है की स्कूलके नाम पर जमीन ले ली जाती है फिर वहा दुकाने बनाकर साईड बिजिनेस किया जारहा है।कुछ स्कूलो में यूनिफार्म बदलने और उनसे कमिशन पाने का नया धंधा चालू होगया है।शायद इसीलिए सरकारी स्कूल अपनी नीली यूनिफार्म में खुश है।हम सभी जानते है कि आज के बच्चे ही हमारे देश का सुनहरा कल है ।पर इन्हेंपढ़ने वाले टीचर और अध्यापक आम तौर पर ग्रेजुएट ही होते है।बड़ी कक्षों में बी एड ,?म एड को रखा जाता है .जबकि छोटे बच्चो को पढ़ाना और उन्हें समझकरसमझाना एक बहुत मुश्किल काम है।इसके लिए बाल मनोविज्ञान जैसे विषयों केजानकार अच्छे शिक्षक बनाए जा सकते है।पर हमारे स्कूलो में मोंटेसरी प्रशिक्षितऔर बाल मनोविज्ञान के जानकार शिक्षक ढूंढे से भी नही मिलते है।और हमबच्चो की शिक्षा की लंबी योजनाये इन्ही अप्रशिक्षित टीचरों पर भरोसा करबना लेते है।इन टीचरों की तनख्वाह भी ज्यादा नही होती ,कुछ मज़बूरी वश करते है तो कुछअपने मोबाईल ,मेकअप और पेट्रोल का खर्चा उठाने के लिए स्कूल में टीचर बन जातेहै।हमारा दुर्भाग्य है की सरकार एवं शिक्षा मंत्रालय बच्चों की नींवबनाने वाले इन अध्यापको के प्रशिक्षित करने हेतु कोई विशेष प्रयास नही करती।जबकि रिटायर्ड टीचरों की सेवाएं ली जा सकती है।वैसे भी आजकल स्कूलटीचरों को गुरु या मास्टर साब या सर मैडम के बदले शिक्षा कर्मी कहकर उनकेस्वाभिमान को ख़रीदा जा रहा है।हर शहर में शिक्षाविदो,संचालको ,और प्रबुद्ध बुधिजिवियो की एक लंबी लिस्टहै जिनकी एक कमेटी बनायीं जा सकती है जो हर स्कूल की कार्यप्रणाली परनिगरानी रख सके ।जिनके ऊपर कलेक्टर जैसे बड़े अधिकारी अपना कंट्रोल रखे।इन कमेटी द्वारा स्कूल के स्तर,फीस,खर्चे सम्बंधित बातो पर सीधे तौर परध्यान दिया जा सकता है।बस्तो के अतिरिक्त बोझ को कम करने हेतु समान पाठ्यक्रम का नियम लागु कियाजाये तो बच्चो को बहुत राहत मिलेगी ।वे ट्यूशनऔर होमवर्क से थोडा बहुतनिजाद पा सकेंगे।हमारी शासन और प्रशासन हर शहर में टीचरों के ट्रेनिंग स्कूल खोलने केबारे में विचार कर सकती है।जिसके लिए अनुभवी और सेवा निवृत अध्यापको की सेवा ली ज ासकती है। आइये ,थोडा विचार करे ,आज शिक्षा के गिरते स्तर से बच्चे और अभिभावकदोनों परेशान है साथ ही उन्हें पढ़ने वाले शिक्षक भी रोज नई नई परेशानियोंका सामना करते ही रहते है।इन सब का समाधान निकालना सबके हित के लिए जरुरीहै. शिक्षा के गिरते स्तर ,पुस्तको का भारी बोझ,दोषपूर्ण शिक्षापद्धति,मनमानी फीस.के चक्रव्यूह में फसती जा रही हमारी नई पीढ़ी जिसे हमभावी भारत कहते है इनका भविष्य कितन अच्छा होगा,दिशा कैसी होगी,इनप्रश्नों का उत्तर देना आसान नही है.केवल पास कर देना ,या डिग्री दे देनाही शिक्षा का उद्देश्य नही है.निजी लाभ और औपचारिकता से उठकर भी कुछ कियाजाना जरुरी है।मेकाले की शिक्षा नीति ने आज भी हमे गुलामी से मुक्त नही किया है।हमे हीअपने बच्चो के लिए ,समाज के लिए देश के लिए आज जागने की जरूरत है आशा हैहम वह सब जल्द ही कर पाएंगे,जिस के भरोसे हमारी भावी पीढ़ी आगे बढ़ना चाह रही है ।

ई .अर्चना नायडू .
भोपाल
9575675193

सरस्वती के साधक कड़ी मेहनत से सूचनाओं को आमजनों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं-

जवाहर डोसी पीयूष मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा है कि पत्रकार लोकतंत्र के सच्चे सेनानी होते हैं।सरस्वती के साधक होने के साथ ही कड़ी मेहनत से सूचनाओं को आमजनों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।मुख्यमंत्री डॉ.यादव बुधवार को मुरैना जिला मुख्यालय पर म.प्र.श्रमजीवी पत्रकार संघ के त्रिवर्षीय दो दिवसीय महाधिवेशन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा है कि म.प्र.श्रमजीवी पत्रकार संघ द्वारा पत्रकारों के हित में जो मांगें रखी गई हैं,उसके निराकरण के लिये शासन स्तर से एक कमेटी का गठन किया जायेगा।इस कमेटी में श्रमजीवी पत्रकार संघ के पदाधिकारियों के साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों को शामिल कर पत्रकारों की समस्याओं का निराकरण किया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि श्रमजीवी पत्रकार संघ पत्रकारों के हित में कार्य करने वाला बहुत पुराना संगठन है।संगठन के अध्यक्ष श्री शलभ भदौरिया पत्रकारों के हित में निरंतर कार्य करते रहते हैं।उनके नेतृत्व में प्रदेश भर में श्रमजीवी पत्रकार संघ कार्य कर रहा है।विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर, विधायक श्री दिनेश गुर्जर,सांसद श्री शिवमंगलसिंह तोमर, श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रांताध्यक्ष श्री भदौरिया,श्री आशीष अग्रवाल, पूर्व विधायक श्री बलवीर डण्डौतिया,श्रमजीवी पत्रकार संघ के ग्वालियर-चंबल संभाग के प्रभारी श्री सुरेश शर्मा,कार्यक्रम संयोजक श्री राजकुमार दुबे, जिला अध्यक्ष श्री रामशरण शर्मा एवं प्रदेश भर से आए पत्रकार साथी उपस्थित थे।विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने कहा कि पत्रकार लोकतंत्र की सबसे जागरूक कौम है। श्रमजीवी पत्रकार संघ मध्यप्रदेश का सबसे पुराना संगठन है।संगठन के अध्यक्ष श्री शलभ भदौरिया के नेतृत्व में प्रदेश भर में पत्रकारों के हित में यह संगठन कार्य कर रहा है।पत्रकार साथी निरंतर कार्य कर महत्वपूर्ण सूचनाओं को आम जन तक पहुँचाने के दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं।श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रांताध्यक्ष श्री भदौरिया ने मुख्यमंत्री डॉ.यादव के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।उन्होंने कहा कि श्रमजीवी पत्रकार संगठन की मांग पर मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने पत्रकार बीमा कराने की तिथि बढ़ाने की घोषणा की, जिसके कारण प्रदेश भर के पत्रकारों को लाभ हुआ है।उन्होंने इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पत्रकारों के हित में विभिन्न माँगों का एक ज्ञापन भी सौंपा।श्री भदौरिया ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि पत्रकारों के हितों के लिये इन मांगों को प्रदेश सरकार शीघ्र पूर्ण करे।कार्यक्रम में प्रदेश भर के जिलों से आए श्रमजीवी पत्रकार संघ के जिला अध्यक्षों ने भी अपनी-अपनी बात रखी।

बदलते परिवेश में त्योहारों की प्रासंगिकता

भारतीय समाज में त्योहारों का सदियों से गहरा सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक महत्व रहा है। ये उत्सव न केवल ऋतु परिवर्तन, फसलों की कटाई, या धार्मिक मान्यताओं से जुड़े हैं, बल्कि ये समाज में एकता, आनंद, और सामूहिक चेतना का प्रतीक भी हैं। लेकिन आधुनिकता, शहरीकरण, और ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में त्योहारों का स्वरूप और उनकी प्रासंगिकता पर सवाल उठने लगे हैं। क्या डिजिटल युग और भागदौड़ भरी जिंदगी में त्योहारों का वही मूल्य बचा है? या ये सिर्फ रूढ़िवादी रस्मों तक सीमित होकर रह गए हैं?

परिवर्तन के कारण

1.शहरीकरण और व्यस्त जीवनशैली ;महानगरों में रहने वाले लोगों के पास समय की कमी और व्यक्तिगत जीवन की भागदौड़ ने त्योहारों की सामूहिकता को प्रभावित किया है। पहले जहां पूरा गाँव या मोहल्ला मिलकर त्योहार मनाता था, वहीं आज अक्सर लोग इन्हें अकेले या सीमित परिवार के साथ ही सेलिब्रेट करते हैं।

प्रौद्योगिकी का प्रभावः सोशल मीडिया और डिजिटल संवाद ने त्योहारों को वर्चुअल बना दिया है। उदाहरण के लिए, दिवाली की बधाई अब व्हाट्सएप स्टिकर तक सीमित हो गई है, जबकि रिश्तेदारों से मिलने की परंपरा कम हो रही है।

3. वैश्वीकरण और पश्चिमी संस्कृतिः क्रिसमस, वेलेंटाइन डे जैसे उत्सवों ने भारतीय युवाओं को आकर्षित किया है, जिससे कुछ पारंपरिक त्योहारों की लोकप्रियता कम हुई है।

प्रासंगिकता के पक्ष में तर्क -

1. सांस्कृतिक पहचान का संरक्षणः त्योहार हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हैं। होली की रंगत, दिवाली की रोशनी, या ईद की मिठास—ये सभी हमारी साझा विरासत को जीवित रखते हैं।

2. सामाजिक एकताच त्योहार समाज के हर वर्ग को एक सूत्र में बांधते हैं। चाहे वह गणेशोत्सव हो या गुरु पर्व, ये उत्सव सामूहिक भागीदारी और सद्भाव को बढ़ावा देते हैं।

3. मानसिक स्वास्थ्य और खुशी;आधुनिक जीवन के तनावों के बीच त्योहार आनंद और विश्राम का अवसर देते हैं। पारंपरिक गीत, नृत्य, और व्यंजन लोगों को भावनात्मक सुकून प्रदान करते हैं।

4. आर्थिक गतिविधियाँः त्योहार व्यापार और रोजगार को बढ़ावा देते हैं। दिवाली पर दिये-पटाखों से लेकर होली के रंग तक, छोटे व्यवसायियों के लिए यह समय आय का महत्वपूर्ण स्रोत होता है।

चुनौतियाँ और समाधान

-व्यावसायीकरणः त्योहारों का मूल उद्देश्य अक्सर भौतिकवाद और खरीदारी में डूब जाता है। उदाहरण के लिए, दिवाली पर उपहारों की होड़ ने इसके आध्यात्मिक पहलू को कमजोर किया है।

- पर्यावरणीय प्रभावः पटाखों से प्रदूषण या होली के रासायनिक रंगों से पर्यावरण को नुकसान जैसे मुद्दे गंभीर हैं।

समाधान के रास्ते; -

- सतत उत्सवः प्रकृति-अनुकूल तरीके अपनाएँ, जैसे ईको-फ्रेंडली दीये या प्राकृतिक रंगों से होली मनाना।

- डिजिटल संयोजनः परिवार से दूर रहने वाले लोग वीडियो कॉल के जरिए त्योहारों में शामिल हो सकते हैं।

- युवाओं की भागीदारीः स्कूल और कॉलेजों में त्योहारों के इतिहास और महत्व से जुड़े कार्यक्रम आयोजित करना।

त्योहार समय की धारा में बहते हुए भी अपनी मौलिकता बनाए रख सकते हैं, बशर्ते हम उन्हें बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढालें। आवश्यकता इस बात की है कि हम त्योहारों की ÷भावना÷ को संरक्षित रखें, चाहे उनका ÷स्वरूप÷ बदल जाए। जब हम पर्यावरण, समावेशिता, और आधुनिक जीवनशैली के साथ समझौता करते हुए इन्हें मनाएँगे, तभी त्योहार वास्तव में प्रासंगिक बने रहेंगे। आखिरकार, त्योहार मनुष्य की आत्मा को जोड़ने वाले सेतु हैं—चाहे वह पारंपरिक दीया हो या आधुनिक एलईडी लाइट!

वीरेंद्र कुमार शर्मा निदेशक
- डुअर्श पैराडाईज फ़ाउंडेशन,
नोएडा (उत्तर प्रदेश)
फ़ोन न. 92202,32711

फतेह मस्जिद में सामूहिक रोजा इफ्तार का कार्यक्रम आयोजित

महिदपुर। महिदपुर में पवित्र माहे रमजान के 25 वें रोजे के अवसर पर सामूहिक रोजा इफ्तार का कार्यक्रम नौजवान कमेटी द्वारा आयोजित किया गया।इस दौरान रोजा इफ्तार नौजवान कमेटी के नौजवानों और बड़ी संख्या में रोजेदारों ने अमन चैन और खुशहाली की दुआ मांगी।दुआ-ए-खेर के बाद बड़ी संख्या में रोजेदारों ने एक साथ मगरिब की अज़ान होते ही रोजा इफ्तार किया।प्रति वर्षानुसार सामूहिक रोजा इफ्तार का कार्यक्रम फतेह मस्जिद नौजवान कमेटी द्वारा आयोजित किया गया।